सावधान! जैन धर्मानुलम्बियों

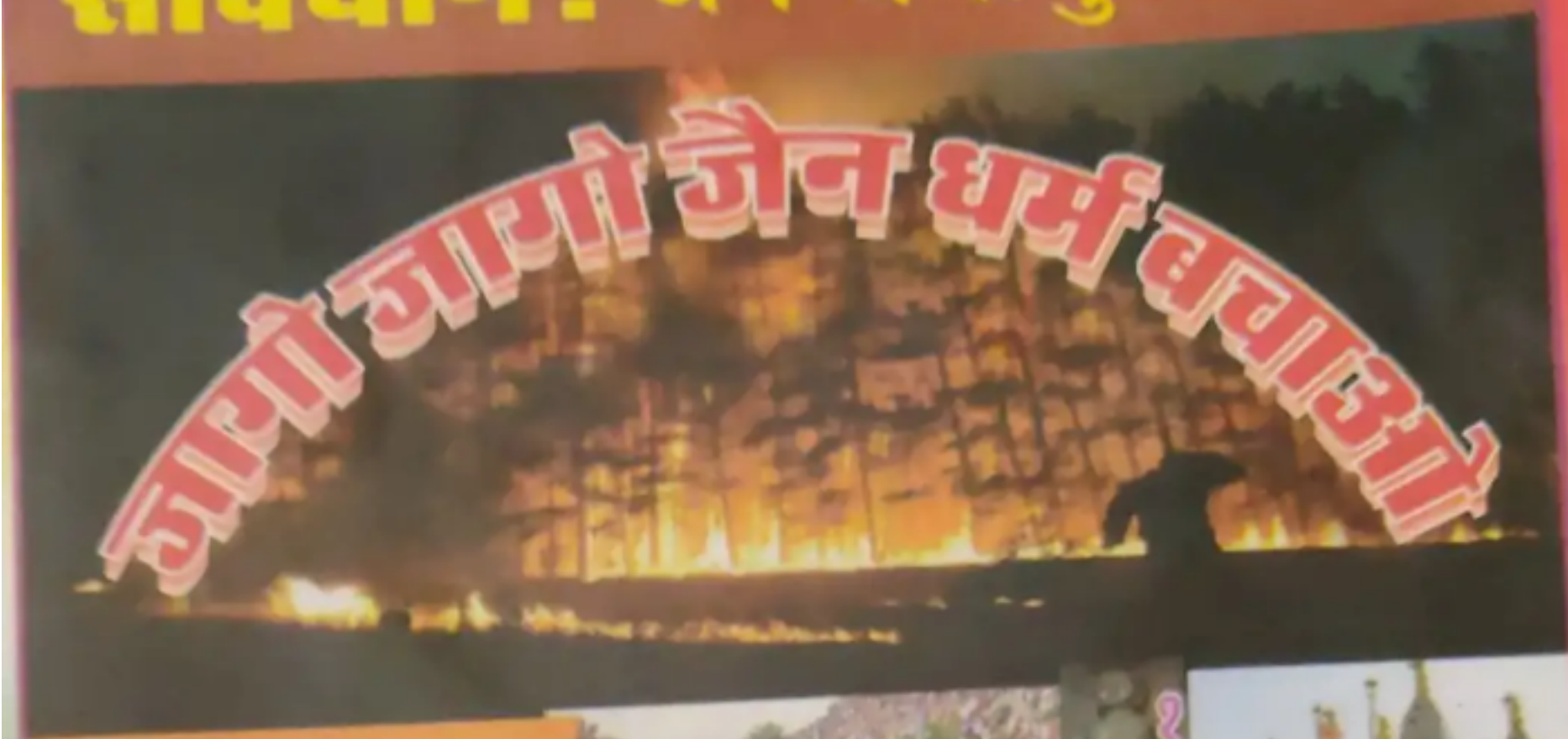

पूर्व काल में समाज
मूर्ति व मंदिर >

वर्तमान में समाज
मूर्ति व मंदिर >

भविष्य में जैन समाज
मुनि, मूर्ति, व मंदिर >

श्रावक ० मुनि ० मूर्ति ० मंदिर ०

श्रावक घटते जाय तो, कहाँ बचे मुनिराज।
बचे न मंदिर मूर्ति भी, जागो जैन समाज॥

चिंतित चिंतक

आशु कवि दिगंबर जैन मुनि उत्तम सागर जी महाराज

घटती जनता जैन की, देख रो रहे नैन।
मन्दिर बचे, न मुनि बचे, यदि न बढ़ेंगे जैन।।

मुख्य पृष्ठ का चित्र परिचय

हरे भरे जंगल में आग लगी है उस में एक इन्सान खड़ा होकर चिल्ला रहा है। इस हरे भरे जंगल को आग से बचाओ। इस तरह हरे भरे जैन समाज को चारों ओर से, मिथ्यात्व, पंथवाद, विजाति विवाह, गर्भपात, व्यसन आदि भयानक अग्नि ने घेरा है। इससे समाज को और धर्म को कैसे बचायें। यह एक ज्वलंत प्रश्न आज समाज के सामने और गुरुओं के सामने खड़ा है ?

घटते हुए जैन समाज को देखकर यह कवर पृष्ठ बनाया है।

पूर्वकाल में :-

समाज करोड़ों में थी, मूर्ति एक अर्थात् बहुत सी थीं और मन्दिर और भी कम थे। पर....

वर्तमान काल में :-

समाज तीन संख्या में अर्थात् माता-पिता और एक बेटा इतना छोटा परिवार रह गया है। मूर्तियाँ तीस हजार यानी अति मात्रा में बढ़ गई है। मन्दिर तीन हजार मतलब, पूर्वकाल की अपेक्षा वर्तमान में मन्दिरों की संख्या बहुत अधिक हो गई है।

भविष्य काल में :-

श्रावक, मुनि, मूर्ति और मन्दिर शून्य अर्थात् ना के बराबर रह जायेंगे। इसलिए अगर जैन धर्म को पंचम काल के अंत तक बचाये रखना है तो सम्पत्ति को नहीं संतान की संख्या बढ़ाना होगा।

अन्तिम पृष्ठ का परिचय

सूर्य अस्त हो रहा है और चारों ओर अंधकार छा रहा है। इसी तरह अब जैन धर्म का सूर्य अस्त (डूबता) हुआ, सा लग रहा है।

धन संग्रह नहीं, जन संग्रह करो।
श्रावकों की सही सम्पत्ति धन नहीं संतान है।
संस्कृति की रक्षा सम्पत्ति से नहीं, संतान से और समाज से होती है।

जैन समाज की हालत

घटती जैन समाज को, देख देख कर आज।
चिंतित है दिन रात ही, श्रावक अरू महाराज।।

आकाश के समान इस भारत में विशाल जैन समाज शून्य होता जा रहा है। शून्य के समान अन्य समाज आकाश के समान विशाल होता जा रहा। भगवान महावीर के समय चालीस करोड़ जैनियों की जन संख्या इस भारत मे थी। घटती-घटती राजा औरंगजेब के समय चार करोड़ हुए फिर घटती-घटती आज मात्र पूरे भारत मे अस्सी लाख बची है। इसी तरह अगर घटती जायेगी तो आने वाले पचास साल में इन क्षेत्रों की मंदिरों की और मूर्तियों की रक्षा कैसे होगीं? थोड़े ठंड़े दिमाग से सब लोग सोचें ..... भविष्य में जैन धर्म का क्या होगा?

जैन समाज घटने का मुख्य कारण

१. खेती और व्यापार जो पूर्वजों का व्यवसाय था उसे छोड़कर नोकरी के लिए भागना।
२. बच्चिओं को ज्यादा पढ़ाकर नोकरी कराना।
३. टी.वी. और मोबाईल से अश्लील चित्रों को देखकर शील से रहित हो ना।
४. अधिक उम्र होने के बाद अर्थात (तीस पैतीस साल के बाद) शादी करना।
५. विदेशी सभ्यता का आचरण अपनाना।
६. भोग विलासता बढ़ना।
७. संस्कार रहित होकर सभ्यता से दूर भागना।
८. परिवार और संतान से प्यार , प्रेम कम होना।

सावधान - देश, धर्म और समाज मिट रहा, श्रावकों और संतों इसे बचाओ।

जैन धर्म को बचाने का उपाय

आदिनाथ के काल में, सब जनता थी जैन।
फिर भी प्रभु सौ सुत जने, क्यों यह सोचो जैन।।१।।
बचे नही श्रावक अगर, नही बचेंगें संत।
संत धरा पर ना बचे, जैन धर्म का अंत।।२।।
जैन धर्म, मुनि धर्म की, रक्षा का सब भार।
श्रावक के ही हाथ है, अतः सु सुत हो चार।। ३।।
चार चार संतान हो, तभी बचेगा धर्म।
नहिं तो कुछ ही साल में, मिट जायेगा धर्म।।४।।
दस करोड़ का दान भी, बचा न सकता धर्म।
किंतु पुत्र के दान से, रक्षित होगा धर्म।। ५।।
क्षेत्र दान, धन, दान या, दो प्रतिमा-सौ दान।
धर्म बचाने के लिए, सुपुत्र दान महान।। ६।।
श्रावक के संतान बिन, संत कहाँ से आय।
संत और अरहंत का, श्रावक मूल कहाय।।७।।
मात्र एक ही पुत्र हो, क्या आये वो काम।
धर्म करे-या-मुनि बने, या रक्षेगा धाम।।८।।
चाहो रक्षा धर्म की, जन्मो सुपुत्र चार।
एक पुत्र से ना बचे, धर्म और परिवार।। ९।।
श्रावक-जन, पर ही टिका, मन्दिर अरु जिन-धर्म।
श्रावक ही मिट जाए तो, कहाँ बचेगा धर्म।। १०।।
जन संख्या से ही बचे, मन्दिर, मुनि अरु धर्म।
श्रावक ही घट जाय तो, बचे न मुनि अरु धर्म।।११।।
बहुत संत को चाहते, श्रावक जन हर कोय।
बिना बहुत संतान के, संत कहाँ अति होय।।१२।।
बालक रोता कुछ समय, ना दोगे उपहार।
बालक रोता जन्म भर, ना दोंगे संस्कार।। १३।।

मात्र एक ही पुत्र हो, बढ़ता उससे राग।
इस से बिगड़े पुत्र वो, देता सब को दाग।।१४।।
बहुत पुत्र यदि होय तो, बट जाता है राग।
राग घटे तो नियम से, होता है वैराग।। १५।।
श्रावक बहु संतान को, चाह रहे ना आज।
बिना बहुत संतान के, कहाँ मिले मुनिराज।।१६।।
चाहे यदि बहु संत तो, करले बहु संतान।
जब हो बहु संतान तब, संत बने संतान।।१७।।
धन से नहिं संतान से, रक्षित होगा धर्म।
अतः अधिक संतान से, बचे संत अरु धर्म।। १८।।
धन संग्रह से भी अधिक, जन संग्रह हो जाय।
धर्म बचाने का यही, होगा सही उपाय।।१९।।

जैन धर्म बचाओ
जन्म-जन्म में जैन धर्म पाओ

१. जिन-मूर्तिओं की संख्या नहीं, जैन-जन की संख्या बढ़ाओ।
२. संतों की नहीं, श्रावकों की संख्या बढ़ाओ।
३. नये जिन-मन्दिरों की नहीं, जैन मकानों की संख्या बढ़ाओ।
४. धर्म बचाना हो, तो धन का नहीं, संतान का दान दो।
५. पंचकल्याण नहीं, जैन-परिवार का कल्याण करो।
६. अब बालब्रह्मचारिओं को नहीं, गृहस्थों को दीक्षा दो।
७. नये तीर्थ क्षेत्रों को नहीं, जैन-श्रावकों को बनाओ।
८. जैन गुरुकुलों में अजैन नहीं, जैन बच्चों को पढ़ाओ।
९. अनाथाश्रम को नहीं, असहाय जैनियों को मदद करो।
१०. नौकरी नहीं, खेती या व्यापार करो।
११. जैन धर्म का प्रवचन नहीं, आचरण करो।

शिक्षित बहू की कार

जो बहू लाती है, दहेज में कार।
वो चलायेगी ससुराल में अपनी सरकार।
पति को कहेगी मक्कार। ससुर को कहेगी गद्दार।
सास को कहेगी धिक्कार। देवर को देगी दुतकार।
ननद को कहेगी बेकार। कभी न जपेगी णमोकार।
मिटा देगी घर ससुराल के धार्मिक संस्कार।
मचा देगी ससुराल में रोज हाहाकार।
क्योंकि वो लाई है दहेज में मारुती कार।
इसीलिए वो चलायेगी ससुराल में अपनी ही सरकार।

संस्कारित बहू की कार

जिस घर में बहू लायेगी संस्कार की कार ।
उस घर का होगा जग में जय जयकार ।
पति को देगी सदा प्यार का पुरस्कार ।
बच्चों को देगी अच्छे अच्छे संस्कार ।
परिवार के हर गम को करेगी सहर्ष स्वीकार ।
सब के ऊपर करेगी सदा उपकार ।
जाप करेगी रोज मंत्र णमोकार ।
क्योंकि लाई है संस्कार की कार ।
अतः बंधुओं ऐसी ही बहू लाना ।
जो आये बिना मारुती-कार ।

मन से किया हुआ जख्म, ना दिखता है, ना दुखता है।
तन से किया हुआ जख्म, दिखता है पर कम दुखता है।
वचन से किया हुआ जख्म, दिखता नहीं है पर बहुत दुखता है।।

परम कटु सत्य

पाप कर्म ही श्राप है, पुण्य कर्म भगवान।
पाप पुण्य से ना बड़ा, कोई भी भगवान।।१।।
पुण्य बढ़ाने के लिए, निमित्त है भगवान।
इसीलिए हम पूजते, वीतराग भगवान।।२।।
अपने कर्मों के बिना, हम को सुख दुख स्थान।
दे नहि सकते विश्व के, कोई भी भगवान।।३।।
पुण्य बिना ना धन मिले, धन बिन होय न काम।
पुण्य करो दिन-रात तुम, छोड़ पाप का काम।। ४।।
लेता देता ना कभी, कोई भी भगवान।
लेता देता कर्म है, कर्म बड़ा बलवान।।५।।
ज्ञान बड़ा ना श्रम बड़ा, बड़ा पुण्य ही होय।
सेवक-ज्ञानी-श्रमिक है, पुण्यात्मा नृप होय।।६।।
धर्म-भूमि में दान का, बोएगा जो बीज।
उसको ही संसार में, मिलती अच्छी चीज।।७।।
मात्र माँगने आत हो, प्रभु कहते सुन भक्त।
मिलने को भी आ कभी, बनकर सच्चा भक्त।।८।।
गृही-धर्म-उपदेश दे, तो वह श्रावक भ्रष्ट।
संत कर्म उपदेश दे, तो वह मुनि भी भ्रष्ट।।९।।
अधिकृत निंदा पाप ना, निंदा करना पाप।
वैद्य चीरता पाप ना, डाकू चीरे पाप।।१०।।
श्रावक तो अंधा रहा, संत पंगु कहलाय।
तब भव वनाग्नि से बचे, जब दोनों मिल जाय।।११।।
धर्म-देशना का नहीं, श्रावक को अधिकार।
अंध-दिखाए मार्ग तो, भटक मरे संसार।।१२।।

आज आचरण शुद्ध के, संतों का ना मूल्य।
किन्तु प्रखर वक्ता बनों, तो है जग में मूल्य।।

कलियुग का हाल

कैसा आया देख लो, कलियुग का यह हाल।
धर्म नाम पर कर्म कर, चलते उलटी चाल।।१।।
भक्त-अधिक, भगवान-कम, यह सतयुग का काल।
भक्त-अल्प, भगवान-अति, यह कलियुग का हाल।।२।।
नये-नये मन्दिर यहाँ, बना रहे हर रोज।
किन्तु भक्त नित घट रहे, मिटे धर्म इक रोज।।३।।
आज दान तो कम करे, चाहे बड़ा सु नाम।
इसको ही कहते यहाँ, कलियुग का यह नाम।।४।।
पुण्य चाहते हैं सभी, करें रात दिन पाप।
कलियुग का यह हाल है, कहाँ कटेंगे पाप।। ५।।
नारी करती नौकरी, पुरुष करे घर काम।
कलियुग का यह हाल है, धर्म हुआ बदनाम।।६।।
कर्म करन में शर्म नहीं, धर्म करन में शर्म।
कलियुग का यह हाल है, बने भक्त बेशर्म।।७।।
आज प्रदर्शन का लगा, धर्म-कार्य में होड़।
भक्त बने कम्बख्त हैं, कलियुग का यह जोर।।८।।
खाते हैं धन धर्म का, करते ना कुछ दान।
ऐसे बगुले भक्त को, कलियुग है वरदान।।९।।
धर्म शत्रू सा लग रहा, अरु दुष्मन भगवान।
गुरु वैरी सा लगे यदि, यह कलियुग पहचान।।१०।।
तीर्थंकर मुनि मौन हैं, सतयुग में थे श्रेष्ठ।
आज अधिक जो बोलता, वह मुनि होता श्रेष्ठ।।११।।

सतयुग में ध्यानी मुनि का मूल्य था, कलियुग में ज्ञानी मुनि का मूल्य है।
सतयुग में भावना का मूल्य था, कलियुग में प्रभावना का मूल्य है।।
सतयुग में दानी का मूल्य था, कलियुग में धनी का मूल्य है।।
सतयुग में दर्शन का मूल्य था, कलियुग में प्रदर्शन का मूल्य है।।

श्रावक और साधु का संबंध

-:: दोहे ::-

श्रावक तो व्यवहार है, अरु निश्चय है संत।
इन दोनों का मिलन ही, मोक्ष-महल का पंथ।।१।।

दानी तो श्रावक रहा, त्यागी होता संत।
ज्ञानी तो अरहंत हैं, सिद्ध सही भगवंत।। २।।

श्रावक तो डण्डा रहा, अरु झण्डा है संत।
दोनों मिलते फहरती, जैन ध्वजा जयवंत।।३।।

श्रावक करना दान तो, बनता है धनवान।
साधू करता ध्यान तो, बन जाता भगवान।।४।।

ज्ञान दान में मुख्य तो, मुनियों का अधिकार।
अन्य दान में मुख्य है, श्रावक का अधिकार।।५।।

ज्ञान दान श्रावक करे, होगा धर्म विनाश।।
अन्य दान यदि करे मुनि, मुनिपद का हो नाश।।६।।

दाता श्रावक शोभता, शोभे संत सुपात्र।
दोनों उलटे चले यदि, दोनों बने कुपात्र।।७।।

धर्म वृक्ष का मूल तो, श्रावक ही कहलाय।
और संत सब फूल है, फल प्रभू सिद्ध कहाय।।८।।

श्रावक तो संतान का, करते हैं निर्माण।
और संत संतान को, देते हैं निर्वाण।।९।।

श्रावक तो अंधा रहा, अरु लंगड़ा है संत।
दोनों मिलते पार हो, जलता भव-वन अंत।।१०।।

शिव पथ दिखता ना उसे, संत दिखाते देख।
श्रावक, दिखता मार्ग जो, उसे दिखाते देख।।११।।

श्रावक तो गन्ना रहा, अरु गुड़ समान संत।
श्रावक गन्ना मिटे यदि, कहाँ मिले गुड़ संत।।१२।।

मुनि घी, श्रावक दूध है, रखो दूध को शुद्ध।
श्रावक ना हो शुद्ध तो, कहाँ मिले मुनि शुद्ध।। १३।।

श्रावक आराधक रहा, और संत आराध्य।
दोनों अपने स्थान में, रहे कार्य हो साध्य।।१४।।

श्रावक देता संत को, आहारादिक दान।
अरु श्रावक को संत जी, करे ज्ञान का दान।।१५।।

श्रावक घटते जाय तो, संत कहाँ से आय।
संत बिना भगवंत का, मार्ग कौन दिखलाय।।१६।।

गृही बनाता क्षेत्र तो, गृहस्थ श्रेष्ठ कहाय।
संत बनाता क्षेत्र तो, संत भ्रष्ट कहलाय।।१७।।

श्रावक दान विधान से, प्रवचन तप से संत।
प्रभावना जिन-धर्म की, करे, कहे अरहंत।।१८।।

गृही चेहरा सा रहा, और चरण है संत।
झुके चेहरा चरण पे, तब बनता शिव पंथ।।१९।।

श्रावक जन्मे पुत्र पर, ना देंगे संस्कार।
मुनि ना जन्मे पुत्र पर, देते हैं संस्कार।। २०।।

श्रावक तो श्रोता रहा, अरू वक्ता है संत।
श्रोता वक्ता बने यदि, जैन धर्म का अंत ।।२१।।

बचे न श्रावक जैन तो, बचे न मन्दिर संत।
संत बिना जिन धर्म का, होगा निश्चित अंत।।२२।।

श्रावक जीवन में सही, धन है सत् संतान।
अपार धन, संतान बिन, हर दुख का है स्थान।।२३।।

प्रेम बढ़े, भय सब मिटे, हो यदि बहु संतान।
प्रेम घटे, नित भय बढ़े, हो यदि कम संतान।।२४।।

**एक धर्मात्मा सौ पापियों को सुधारे,
तो वह सतयुग होता है।
सौ पापी मिलकर एक धर्मात्मा को
बिगाड़े तो वह कलियुग होता है।**

नमकीन सत्य

कड़वा लगता हूँ सदा, क्योंकि बोलता सत्य।
मीठा बोले तो नही, कहना कहा असत्य।।१।।
बुरी संगती कोयले, जैसे ही है जान।
ठंडे हो काला करे, जले जलाए जान।।२।।
दान करे तो नियम से, लक्ष्मी आती पास।
त्याग करे तो सरस्वती, आ जाती है पास।।३।।
सात-वार से भी बड़ा, अष्टम है परिवार।
यह खुश हो तो सुखद से, कटते सातों वार।।४।।
दानी तो श्रावक रहा, अरू त्यागी है संत।
ज्ञानी तो अरहंत हैं, सिद्ध सही भगवंत।।५।।
श्रावक देते दान हैं, मुनि देते हैं ज्ञान।
दोनों त्यागें मान तो, दोनों का उत्थान।। ६।।
संत अकेला हो भले, किन्तु रहे निस्वार्थ।
तजे ख्याति, जय तो उसे, मिलता है परमार्थ।।७।।
संत संघ में भी रहे, चहे ख्याति जय स्वार्थ।
शिथिलाचारी संत वह, ना पाता परमार्थ।।८।।
करो साधना तुम सदा, अपने हित के काज।
करो भावना तुम सदा, जन जन के हित काज।।९।।
साधु साधना नित करे, बनने को भगवान।
भक्त भावना नित करे, बनने को भगवान।।१०।।
जनता की रक्षा करे, वो क्षत्रिय कहलाय।
जनता की सेवा करे, वही शुद्र कहलाय।।११।।
ज्ञान धर्म का मत करो, करो धर्म का पान।
धर्म ज्ञान में मान है, धर्म पान मे शान।।१२।।
गुण-धन ही अति श्रेष्ठ धन, गुण बिन सब धन व्यर्थ।
मिले गुणी को मोक्ष अरु, मिले धनी को गर्त।। १३।।

सावधान ! पंथवाद के मोही

आगम को मत मोड़ो,
सत्य को मत छुपाओ

जिनवर का जो पंथ है, वह तो मेरा पंथ।
मनमानी जो पंथ है, वह तो तेरा पंथ।।

सत्य बोलने में अगर, मौन रहोगे आप।
असत्यवादी से बड़े, पापी समझो आप।।१।।
डर के कारण सत्य को, नहिं बोलोगे आप।
तीन-लोक में है नहीं, इस से बड़ा न पाप।।२।।
साफ साफ जो बोलता, कड़वा लगे जरूर।
पर वह धोके बाज नहि, समझो इसे हुजूर।।३।।
पंथवाद में मत फसो, पंथवाद है पाप।
पंथवाद को छोड़कर, धारो शिव-पथ-आप।।४।।
आर्ष-ग्रंथ अरु संत पर, जिसको ना श्रद्धान।
सम्यग्दृष्टी वो कभी, हो ना सकता जान।।५।।
जनहित में निर्ग्रंथ गुरु, लिखे सु जितने ग्रंथ।
इनको जो ना मानते, वो ना जैनी-पंथ।।६।।
पंथवाद से श्रेष्ठ है, हितकर शिवपथ-वाद।
पंथवाद को छोड़कर, ले लो शिवपथ-स्वाद।।७।।
सच्चा साधू ही सदा, पंथवाद को छोड़।
शिवपथ से हर जीव का, नाता देता जोड़।।८।।
पूर्वाचार्यों को तथा, उनके रचे सु ग्रंथ।
जो इन को ना मानता, वह ना श्रावक संत।।९।।
ना रहते शाश्वत कभी, संत और अरहंत।
किन्तु शास्त्र शाश्वत सदा, इसमें मत ला पंथ।।१०।।

पूर्वाचार्यों ने लिखा, जो ग्रंथों में धर्म।
इसको जो ना मानता, उसके पास न धर्म।।११।।

पंथवाद में संत भी, भटक गये शिव-पंथ।
पंथवाद मिथ्यात्व है, कहते हैं अरहंत।।१२।।

आगम में जो भी लिखा, इसे छिपा मत आप।
पंथ-मोह में छिपा यदि, इस से बड़ा न पाप।।१३।।

जैन संत भी ग्रंथ के, बोले अगर विरुद्ध।
ना वो सच्चा संत है, ना वो संत प्रबुद्ध।।१४।।

पंथ-मोह में, पूर्व के, ग्रंथों को मत छोड़।
सत्य बात कह, धर्म से, जन जन को तुम जोड़।।१५।।

संत, ग्रंथ जो पूर्व के, वे न तुम्हें यदि मान्य।
वर्तमान के संत फिर, कैसे होंगे मान्य।।१६।

संत और अरहंत से, सदा श्रेष्ठ हैं ग्रंथ।
तुम ना इनको मानते, ना तुम श्रावक संत।।१७।।

पूर्वाचार्यों को अगर, नहिं मानोगे आप।
वर्तमान आचार्य को, क्यों मानत हो आप।। १८।।

वर्तमान आचार्य हो, या हो पूर्वाचार्य,
जो ना इनको मानता, वह ना सच्चा आर्य।। १९।।

भ्रष्ट पंडितों के पढ़े, ग्रंथ आज कुछ संत,
पूर्व संत के ग्रंथ को, कहने लगे कु ग्रंथ।। २०।।

पूर्व संत के ग्रंथ का, कर-कर के स्वाध्याय,
आज उन्हें समझा रहे, इन्हें कौन समझाय।।२१।।

बीस पंथ में आ गया, ज्यादा शिथिलाचार।
तेरह पंथी में भरा, ज्यादा भ्रष्टाचार।। २१।।

समय की पुकार

छोटा परिवार - सुख-चार / दुःख-हजार।

१. सुख चार :- 1. उच्च शिक्षा, 2. कम जिम्मेदारी 3. भोग विलास, 4. कम रिश्तेदार।

२. दुःख हजार :- नाते खत्म होना, भयाकुल होना, अंत में असहाय होना, अनाथ होना, अतिप्यार से संतान का बिगड़ना, विजाति विवाह करना, माता-पिता को धमकाना, व्यसनी होना, बड़ों की आज्ञा में नहीं रहना, धन की बरबादी करना, कुल को कलंक लगाना, माता-पिता की इज्जत मिट्टी में मिलाना, वंश को मिटाना, अकाल मरण से मरना, धर्म से दूर भागना, परिवार से अलग रहना, मेल-मिलाप का अभाव होना, आत्म हत्या के भाव बढ़ना, आलसी बनना, संस्कार रहित होना, जैन धर्म का मिटना, मुनि परंपरा मिटना, धर्म-ज्ञान से रहित रहना, गुरुओं के पास नहीं जाना, दिन भर घर में अकेले रहना, सुख दुख में अकेले होना आदि आदि।

अतः धन नहीं, संतान बढ़ाओ। धर्म-धन और कुल को बचाओ।

बड़ा परिवार - सुख की बौछार।।

बड़ा परिवार - सुख में सबका इन्तजार

संकट में बड़ा आधार। आपस में प्रेम का व्यवहार।
हर दिन घर में त्यौहार। हर गाँव में रिश्तेदार।
हर काम हकदार। मौहल्ले में दमदार।

सबसे बड़ा दोष क्या है?

दोष व्यक्तिगत करे यदि, इतना बड़ा न दोष।
किन्तु करे, करवाये तो, इससे बड़ा न दोष।।१९।।
पीते शराब स्वयं यदि, इतना नहिं नुकसान।
पीकर पर को पिलाय तो, दुर्गति निश्चित् जान।।२०।।

गम्भीर प्रश्न - सरल उत्तर

प्र. 1. महाराज जी! इस बढ़ती हुई महंगाई में परिवार को बढ़ाने से बच्चों का पालन पोषण कैसा होगा ?

उ. भारत में मंहगाई मात्र जैन समाज के लिए ही है क्या? आज मुसलमानों में दस-दस बच्चे हैं। फिर भी वो अच्छे से खा-पी रहे हैं, मजे में जी रहे हैं। फिर उन्हें महंगाई का कष्ट नहीं हो रहा है तो आप लोगों को कैसे हो रहा है ?

प्र. 2 महाराज जी! मुसलमान के बच्चे ज्यादा पढ़े-लिखे कहाँ होते हैं ?

उ. मुसलमान के बच्चे भले ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते हैं पर धन कमाने की कला और जीवन जीने की कला बहुत अच्छे से जानते हैं ?

प्र.3 महाराजजी! आज बच्चों की पढ़ाई का खर्चा बहुत अधिक हो गया है और ज्यादा बच्चे हों तो सब को कैसे पढ़ायेंगे ?

उ. बच्चों को पढ़ाओ, पर वहीं पढ़ाना और उतना ही पढ़ाना जिससे बच्चे अल्प समय में धन कमा सकें और जीवन अच्छे से चला सकें। बच्चों को पढ़ाकर नौकरी के लिए मत भेजना (नोकर मत बनाना) व्यापारी बनाकर सेठ (मालिक) बनाना।

प्र.4 महाराजजी! चार संतान हो गये तो लोग मजाक उड़ाते हैं। कहने में हमें शर्म भी आती है इसके लिए हम क्या करें ?

उ. सब से अच्छा उपाय कोई पूछे आप के कितने संतान हैं तो गर्व से कहना, मैं मर्द हूँ इसलिए मेरे चार संतान हैं। जो नामर्द होता है उसके एक या दो ही संतान होते हैं रे।

प्र.5 अधिक संतान हो तो हम इनको अच्छे से कैसे पाल पायेंगे ?

उ. जो भी जीव संसार में जन्म लेता है वो अपना-अपना पुण्य लेकर आता है। बच्चे जन्म लेते ही माँ के स्तनों में दूध अपने आप आ जाता है, यह कहाँ से आया उस बच्चे के पुण्य से ही आया ना ?

जैन धर्म का भविष्य

धर्म बचाना चाहते हो, तो सुनलो कटु बात।
चार चार संतान हो, तभी बनेगी बात।।१।।
दो पुत्री, दो पुत्र हो, इक श्रावक के पास ।
तभी जैन - कुल -धर्म का, कभी न होगा ह्रास।।२।।
करता श्रावक आज जो, चार चार संतान।
वही धर्म - रक्षक रहा, श्रावक श्रेष्ठ महान।।३।।
कान खोलकर के सुनो, सब ही श्रावक संत।
बढ़े नहीं यदि जैन तो, जैन धर्म का अंत।।४।।
पुत्र बनो फिर पति बनो, पिता बनो फिर आप।
फिर यति बनकर ध्यान कर, बन जा तू निष्पाप।।५।।
श्रावक, कम -संतान -कर, रहे भोग मे मस्त।
तो एक दिन हो जायेगा, जैन धर्म रवि अस्त।।६।।

卐 मुक्तक 卐

हर जीव यहाँ अपना अपना पुण्य लेकर आता है।
माँ के पेट से जन्म ते ही माँ के स्तनों मे दूध अपने आप आता है।
बच्चों के पालन पोषण का मिथ्या अहंकार छोड दो।
यहाँ हर जीव अपने पुण्य और पाप से जीता है।

ग्रंथ प्रकाशक - जैन धर्म के रक्षक
जिन धर्म प्रभावना समिति, नसीराबाद (राजस्थान)

प्रथम संस्करण - १००८ प्रति, सन् २०१७
द्वितीय संस्करण - ३००० प्रति, सन् २०१७

बुक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें -
राजकुमार डोसी, नसीराबाद (राज.) 9629027680
विनोद कुमार जैन (आर्मी प्रेस, नसीराबाद) 9414379465

आर्मी प्रेस, नसीराबाद, फोन : 2283342